# विद्युत दर्पण

## पक्षेविसमिति की गृह पत्रिका

अंक - 1 सितम्बर 2006

***सम्पादकीय***

*कुछ वर्षों पहले पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत बोर्ड, मुंबई से विद्युत दर्पण नामक गृह-पत्रिका का प्रकाशन किया जाता था । इसमें तकनीकी और साहित्यिक विषयों पर सार-गर्भित सामग्री प्रकाशित की जाती थी । समय की मार ने इसका प्रकाशन रोक दिया । किन्तु पक्षेविसमिति परिवार के सदस्यों की सृजनात्मक प्रतिभा और इच्छा के तहत 'विद्युत दर्पण' का पुन: प्रकाशन किया जा रहा है । यह दर्पण है कार्यालय की बहुदिश गतिविधियों तथा हमारी मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं को प्रतिबिम्बित करने का माध्यम । यह पत्रिका जहाँ आपको तकनीकी विषयों की हिन्दी में जानकारी देगी वहीं आपमें छिपी साहित्यिक प्रतिभा को प्रकाशित करने का मंच देगी । यह दर्पण न सिर्फ हमें अपने आसपास से जोड़ेगा बल्कि अपने आप से भी जोड़ेगा । यह दर्पण समाचार है, विचार-विमर्श है, मार्ग-दर्शन है, मित्र है मगर तभी तक, जब तक हम इसे अपनाते हैं, इससे संवाद कायम करते हैं, अन्यथा एक नितान्त अपरिचित । अत: हम सभी को मिलकर इसे एक जीवन्त हमसफर के रूप में पल्लिवत करना है।*

*इस पत्रिका का एक उद्देश्य यह भी है कि कार्यालय में राजभाषा के उपयोग की सतत प्रगति हो तथा राजभाषा के उपयोग के लिए हम सभी को प्रेरणा मिले । इस संदर्भ में मुझे हर्ष है कि इस पत्रिका के पहले अंक का प्रकाशन ''हिन्दी दिवस'' के अवसर पर हो रहा है ।*

*हार्दिक शुभकामनाओं सहित।*

आपका,

*प्रवीणभाई पटेल*
*सदस्य सचिव*

**पक्षेविसमिति सचिवालय से**

श्री खीरूराम राय जो प्रति नियुक्ति पर छ.रा.वि.बोर्ड गए थे, दिनांक 1 मई 2006 को सहायक निदेशक श्रे. I के पद पर पदोन्नत होकर पक्षेविसमिति में लौट आए हैं । उनका हार्दिक स्वागत है ।

श्री ने.वे. प्रसाद, कार्यपालक अभियंता, अधिवर्षिता की आयु पर पहुँचने के फलस्वरूप 31 मई 2006 की अपराह्न सेवानिवृत्त हो गए । समस्त पक्षेविसमिति परिवार ने श्री प्रसाद की सेवाओं और चरित्रगत विशेषताओं को याद किया और उनके दीर्घ, स्वस्थ, एवं सुखी जीवन हेतु शुभकामना व्यक्त की ।

इस कार्यालय के दो कार्यपालक अभियंताओं, श्री स्वर्ण सिंह कलसी और श्री विक्रम जीत सिंह अधिवर्षिता की आयु में पहुँच कर 30.06.2006 को सेवा निवृत्त हुए । इस अवसर पर उनकी सेवाओं और व्यक्तिगत विशेषताओं का उल्लेख करते हुए भावभीनी विदाई दी गई और उनके सुखद और स्वस्थ दीर्घ जीवन की कामना की गई ।

अनेक वर्षों तक पक्षेविबोर्ड में कार्यरत रहे और अल्पकाल के लिए मुंबई से बाहर कार्यरत रहने के बाद श्री मदनगोपाल गुप्ता, कार्यपालक अभियंता ने दिनांक 1 सितम्बर 2006 से पक्षेविसमिति में पुन: कार्यभार सम्भाल लिया है । श्री मदन गोपाल गुप्ता का हार्दिक स्वागत !

केविनिआयोग की दिनांक 22.08.2006 की अधिसूचना द्वारा IEGC 2005 में संशोधन करने के बाद साप्ताहिक यूआई एवं रिएक्टिव एनर्जी चार्जेस के बिल 03.09.2006 को समाप्त होने वाले सप्ताह से पक्षेविद्युत समिति द्वारा जारी किये जा रहे हैं तथा मासिक आरईए 1 सितम्बर 2006 माह से पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति द्वारा जारी किया जायेगा।

### पक्षेविसमिति में राजभाषा

पक्षेविसमिति, केविप्रा, मुंबई में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की गति तीव्रतर करने हेतु वर्ष 2005-2006 में चार प्रोत्साहन योजनाएं क्रमश: (i) हिन्दी में मूल टिप्पण-आलेखन संबंधी (मूल) प्रोत्साहन योजना (न्यूनतम शब्द सीमा 20,000), (ii) हिन्दी में मूल टिप्पण-आलेखन संबंधी (लघु) प्रोत्साहन योजना, (iii) हिन्दी में डिक्टेशन देने संबंधी प्रोत्साहन योजना और (iv) कम्प्यूटर पर हिन्दी में अधिकाधिक काम करने संबंधी प्रोत्साहन योजना । इन प्रोत्साहन योजनाओं की प्रविष्टियों का मूल्यांकन किया गया । विजेताओं का विवरण निम्नानुसार है:

**1. मूल टिप्पण-आलेखन (न्यूनतम शब्द सीमा 20,000),**

प्रथम- श्रीमती सुमेधा राजाध्यक्ष, अ.श्रे.लि. रू. 800/-
प्रथम- श्रीमती अदिति पालकर, अ.श्रे.लि. रू. 800/-

द्वितीय-श्रीमती कुलदीप कौर, प्रधान लिपिक रू. 400/-
द्वितीय-श्रीमती आरती देशमुख, अ.श्रे.लि. रू. 400/-
द्वितीय-श्री रमेश प्रभुगांवकर, उ.श्रे.लि. रू. 400/-

तृतीय- श्रीमती ऋता राणे, उ.श्रे.लि. रू. 300/-
तृतीय- श्रीमती छाया अ.सागरे, अ.श्रे.लि. रू. 300/-
तृतीय- श्री शेषकुमार सावंत, उ.श्रे.लि. रू. 300/-

**2. हिन्दी में डिक्टेशन देना**

प्रथम - श्री स्वर्ण सिंह कलसी, कार्यपालक अभियंता रू. 1000/-
द्वितीय - श्री र.द. पांढरे, कार्यपालक अभियंता रू. 750/-

**3. कम्प्यूटर पर हिन्दी में टंकण कार्य**

प्रथम- तकनीकी वर्ग श्री स्वर्ण सिंह कलसी, कार्यपालक अभियंता रू. 500/-
प्रथम- प्रशासन वर्ग श्रीमती अदिति पालकर, अ.श्रे.लि. रू. 500/-
द्वितीय- श्रीमती ऋता राणे, उ.श्रे.लि. रू. 300/-
तृतीय- श्रीमती कुलदीप कौर, प्रधान लिपिक रू. 200/-

**4. मूल टिप्पण आलेखन (लघु) प्रोत्साहन योजना (न्यूनतम शब्द सीमा 1000)**

प्रथम- श्रीमती शुभांगी कोल्हे, उ.श्रे.लि. (न्यूनतम शब्द सीमा 1000)
प्रथम- श्री स्वर्ण सिंह कलसी, कार्य.अभि. (न्यूनतम शब्द सीमा 3000)
द्वितीय- श्री सुकुमार हानरा, कनि.अभि. (न्यूनतम शब्द सीमा 3000)
प्रथम- श्रीमती नन्दिनी उन्नीकृष्णन, अ.श्रे.लि.(न्यूनतम शब्द सीमा 5000)

विजेताओं को हार्दिक बधाई !

## काव्य - सरिता

### सच्चा सुख, सच्ची सुरक्षा

सुरक्षा और सुख की
सनातन चाह ने
मन के साथ मिल बैठ
बुन डाला
''मैं और मेरा'' की
मोह माया का
एक अनन्त विकराल जाल ।

और मैं,
अपने ही बुने हुए
उस मायाजाल में
फंस गया हूँ ।
और, चाहकर भी
उससे छुटकारा पाने की
हर कोशिश
उलझा जाती है मुझे
गहरे, और गहरे
उस जंजाल में ।

मेरा हर विचार, हर इच्छा, हर कर्म
इसी जाल से उत्पन्न हो,
समा जाता है उसी में,
और मेरा हर स्वप्न
उसी के ताने बाने में उलझा
दिखाई देता है ।

यही जाल है मेरा विश्व
मेरे अपने विचारों का विश्व,
मेरी इच्छाओं , आकांक्षाओं का विश्व ।
मेरे खट्टे-मीठे अनुभवों का विश्व,
मेरे सम्मान और अभिमान का विश्व ।।

नियति से दूर
नियति से अनजान
मेरे इस अछूते विश्व ने
घेर लिया है मुझे
चक्रव्यूह की तरह ।
और , मेरा हंस
मेरी आत्मा
चाहते हैं यह
चक्रव्यूह भेदना
इसे जीतना ।

अपने ही बुने
मकड़जाल, मोहमाया के तले
गहरे, बहुत गहरे
अन्तिम सांसे गिनती-सी
एक ख्वाहिश कसमसा रही है
कि मैं,
एक बार फिर
अलौकिक आनंद की लहरों में
समा जाऊं ,
एक बार फिर
नियति का मीत बन जाऊं ।
न कोई झगड़ा, न कोई विवाद
बस प्रेम और भक्ति भरा संवाद ।

मेरा दर्प
फिर कोई आदेश न दे,
कोई नियम न बनाए ।
जो कुछ हो,
उस अनन्त का हो, असीम का हो ।
उसकी इच्छा ही
आदेश हो, नियम बने ।
जीवन की हर परीक्षा
हर संकट
उसके संकेत मात्र से
पार हो ।

मैं और मेरा
का टूट जाए घेरा,
छूट जाए
जन्म-मरण का फेरा ।
कुछ न रहे मेरा,
''तेरा ही रहे सब कुछ
बस तेरा ।''

-सुरेश द. टाकसांडे
अधीक्षण अभियंता

**मेरे ख्यालों की मलिका**

वह कवि की कोई कल्पना है
या परी लोक की बाला है ।
वह एक अनबूझ पहेली है
जिसका हर चलन निराला है ।
केशों की घनी घटाओं से
एक चाँद-सा मुखड़ा झाँक रहा
चंचल नयनों में सम्मोहन
मधु का अधरों पर प्याला है ।
उसको अगड़ाई लेते हुए
जब मैंने ख्यालों में देखा
मत पूछो दिल पर क्या बीती
कैसे ये होश संभाला है ।
चंदन-सा बदन जब भीग गया
बरसात की तेज फुहारों में
शरमाकर हँसी दाँत चमके
जैसे मोती की माला है ।
आशा की एक किरण बनकर
मेरे जीवन में आई हो
दिल के वीरान अँधेरे में
तुमने कर दिया उजाला है ।
मुझे नहीं चाहिए तुमसे कुछ
बस यूँ ही हँसकर बात करो
दु:ख दर्द और गम को मैंने
खुशियों के पल में ढाला है ।
वह ख्वाब है या कोई हकीकत
कुछ भी कहना मुश्किल है
वह शोला है या शबनम है
देवेन्द्र को कुछ मालूम नहीं
जिसकी हर शोख अदाओं ने
हम पर जादू कर डाला है ।

-देवेन्द्र पाल सिंह
सहायक निदेशक (वाणि.-I)

**आठवण**

आठवण तुझी येता
उठे वादळ मनात
गहिवरे मन माझे
स्वप्न भरत्या श्वासान
समुद्राच्या पाण्यामधी
लाट लाटेशी बोलते
आठवण तुझी मला
दिनरात सतावते
आठवणीचा फुलोरा
मन मळयात फुळला
स्वप्नवेडया रातीमधी
झुला मनाचा झुलला
आतुरत्या मनामधी
गाण आशेच फुलल
जीवनाच्या वाटेवर
मन सैरभर झाल
जीवनाचं गाणं
गात रहावं
जीवनातील दु:ख
हसत स्विकारावं

****

दाकमेकाना देंण घेणं
हर एक व्यवहार आहे
माणसाचं जीवन म्हणजे
एक बाजार आहे

****

दोन शेजारी, रोजारी
एकमेकांच्या मदतीसाठी
असतात
दोघांच्या ब्लॉकची दारे
कधील उघडी नसतात

****

पहाटे पडलेलं धुकं
सूर्य प्रकाशानं निवळतय
सेखे तुझ्या येण्यानं
जीवन माझं उजळतय

****

आभाळ भरून आलं तरी
पाऊस पडत नाही
जीवन संपत आलं तरी
रडगाणं संपत नाही

-अनिल सागरे
द्वारा छाया सागरे, अ.श्रे.लि.

**अनमोल चीज**

दुनिया में सिर्फ एक, हां एक ही चीज है,
जो देने से ही मिलती है,
मिलने से दे पाते हैं
बाँटने से ही बढ़ती है
सीमित कभी नहीं रहती है
दुनिया में------!
दुनिया में सिर्फ एक हां एक ही चीज है
सुखद क्षणों में चलती है संग
दिलों में भर देती है उमंग
पहाड़ों से भी ऊँची
लहरों से भी गहरी
संगीत का यह सुर
जिंदगी का कोहिनूर ।
दुनिया में सिर्फ एक हां एक ही चीज है
किसी भी कीमत पर इसे है पाना
किसी भी हालत में इसे न खोना
और फिर हर पल यही गीत गुनगुनाना
दुनिया में सिर्फ एक हां एक ही चीज है
वह है ----------खुशी ! हां, खुशी!!!

-सृजन शैल
सुपुत्र श्रीमती तरूप्रभा शैल

**शाबाश मुंबई** !

11 जुलाई 2006 को शाम 600 बजे से 630 के बीच पश्चिम रेलवे के चर्चगेट - विरार रेलमार्ग पर हुए आठ हृदय विदारक विस्फोटों ने 200 से भी अधिक लोगों को चिर निद्रा में सुला दिया और 700 से भी अधिक लोगों को अविस्मरणीय रूप से घायल कर दिया । किन्तु इस दुर्घटना ने एक बार पुन: मुंबई महानगर के उस चेहरे को उजागर कर दिया जिसे देखकर प्रत्येक सहृदय व्यक्ति कह उठेगा, ''शाबाश मुंबई!'' टीवी के विभिन्न चैनलों पर और समाचार पत्रों में प्रकाशित सचित्र समाचार वृत्तों ने बताया कि किस तरह पलक झपकते ही, घटनास्थल के आसपास के लोग मदद के लिए दौड़ पड़े, अपने तन के कपड़े तक उतार कर घायलों को ढंका, उन्हें अस्पताल पहुँचाया, लाशों को हटाया, डॉक्टरों नर्सों ने लगातार 25-30 घंटे घायलों का उपचार किया, ट्रेने बंद होने पर कार वालों ने लिफ्ट दी तो, सड़कों पर घंटों ट्रैफिक जाम में फंसे लोगों को चाय-पानी-बिस्कुट-नाश्ता दिया । बच्चों और महिलाओं को रातभर रुकने की सुविधा दी । मुंबई पर जब-जब अप्रत्याशित संकट आया उसने इसी सेवा, समर्पण और परदु:ख कातरता से इसका सामना किया । इस बात ने उस दुश्प्रचार को झुटला दिया है कि मुंबई में कोई किसी को रास्ता तक नहीं बताता । मुंबई के इस संकट मोचक चेहरे को देखकर कौन नहीं कहेगा - शाबाश मुंबई, आमची लाड़ली मुंबई ।

-लक्ष्मण गुप्ता

एक गरीब मजदूर था जिसे दिन भर हाड़ तोड़ मेहनत कर बस इतना ही मिलता कि वह भूखे पेट न सो पाता । कभी भूले-भटके चार आने, आठ आने ज्यादा मिल जाते तो उसका गुड़ खाता और इस नेमत के लिए ईश्वर का शुक्रिया अदा करता । एक बार उसके एक साथी मजदूर ने, जो कुछ अधिक जानता और कमाता था, उसे बताया कि हमारे मालिक तो हर रोज लाखों रूपये कमाते हैं । इस पर वह गरीब दास बोला ''फिर तो वह बहुत सारा गुड़ खाता होगा ।''

-सुरेश डी. टाकसांडे
अधीक्षण अभियंता